ई-संस्करण, अंक 30

Room to Read®
World Change Starts with Educated Children.®

गपशप

प्यारे साथियों,
आशा है कि आप और आपका परिवार अच्छे से होंगे। जैसा कि आप जानते हैं कि सभी बच्चों के स्कूल अभी भी बंद हैं और सब अपने–अपने घर पर ही हैं। हमने सोचा कि हमारे साथियों को अपने गपशप का इन्तज़ार होगा, तो हम आपके लिए लेकर आए हैं गपशप का नया अंक। जिसमें हम सब जानेंगे कोरोना के समय में अपने समय का सदुपयोग कैसे करें और इंटरनेट पर ऑनलाइन पढ़ाई करते वक्त किन बातों का ध्यान रखें। आशा है कि आपको इसे पढ़कर अच्छा लगेगा। घर पर रहें, सुरक्षित रहें।

साहस की पहचान

जब हम साहस की बात करते हैं तो किसी राजा या रानी, अकेले लड़ने वाले शक्तिशाली व्यक्ति, या ख़तरनाक परिस्थितियों में जूझने वाले व्यक्ति की बात होती है। दरअसल, वीर या साहसी होने का मतलब सिकंदर या अशोक महान की तरह होना नहीं है। असल में इसका दायरा बहुत बड़ा है जैसे– किसी काम को पूरा करना अपने आप में चुनौती है, और उसके लिए साहस की ज़रूरत होती है, चाहे वो काम छोटा हो या बड़ा।

दरअसल आलस्य, नकारात्मक विचार और गुस्सा ही व्यक्ति को उसके लक्ष्य से भटकाते हैं। काम को करने के दौरान आने वाली मुश्किलें से विचलित हुए बिना, उस काम को पूरा करना ही साहस है।

साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की परवाह नहीं करता कि लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं।

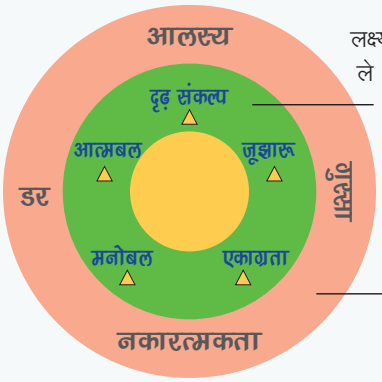

सोचो और लिखो-

साथियों, आपने भी अपने दादा-दादी, नाना-नानी या किसी और से लड़कियों और महिलाओं की वीरता की कहानियाँ सुनी होगी।

आप उस कहानी को साझा कर सकती हैं।

अभया रानी-अब्बक्का

हम एक ऐसी बहादुर और साहसी रानी की बात करने जा रहे हैं, जिन्होंने सोलहवीं शताब्दी में पुर्तगालियों के साथ अपनी आज़ादी के लिए युद्ध किया। इस वीरांगना का नाम था 'अब्बक्का चौटा'। अब्बक्का का जन्म कर्नाटक राज्य में स्थित उल्लाल नगर के चौटा राजघराने में हुआ था। चौटा वंश मातृवंशीय परंपरा का पालन करता था। मातृवंशीय परंपरा एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था थी जिसमें परिवार की स्त्रियाँ ही प्रमुख होती थी और संपत्ति व शासन का हक बेटों के बजाय बेटियों को दिया जाता था।

साल 1525 में अब्बक्का के राज्य पर पुर्तगालियों द्वारा कई बार आक्रमण किया गया, लेकिन अब्बक्का ने हर बार अपने साहस और बहादुरी का परिचय देते हुए उनको अपनी सीमा से बाहर खदेड़ दिया।

चित्र स्त्रोतः यंगवर्ल्ड.दीहिन्दू.कॉम

1567 में पुर्तगालियों ने फिर हमला किया और राजदरबार में घुस गए। लेकिन अब्बक्का रानी उनके हाथ नहीं लगीं। अब्बक्का ने एक मस्जिद में आश्रय लिया। उसी रात उसने 200 सैनिकों को इकट्ठा कर पुर्तगालियों पर आक्रमण किया। इस लड़ाई में पुर्तगालियों के 70 सैनिकों को बंदी बनाया गया। बाद में उन्होंने पुर्तगालियों को मंगलोर का किला खाली करने पर मजबूर कर दिया।

उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण ही आज भी यक्षगान जो कथक की एक पारंपरिक नाट्यशैली है, उसके द्वारा उनके साहस की कहानी बार–बार दोहराई जाती है। भूटा कोला एक स्थानीय नृत्य प्रकार है, जिसमें अब्बक्का महादेवी के महान कारनामे दिखाए जाते थे। ऐसा भी माना जाता है कि रानी अब्बक्का लड़ाई में अग्निबाण का उपयोग करने वाली आख़िरी शख़्स थीं। उनकी अच्छाइयों और वीरता के कारण ही उन्हें 'अभया रानी' भी कहा जाता था जिसका मतलब है ऐसी बहादुर रानी जो किसी से नहीं डरती।